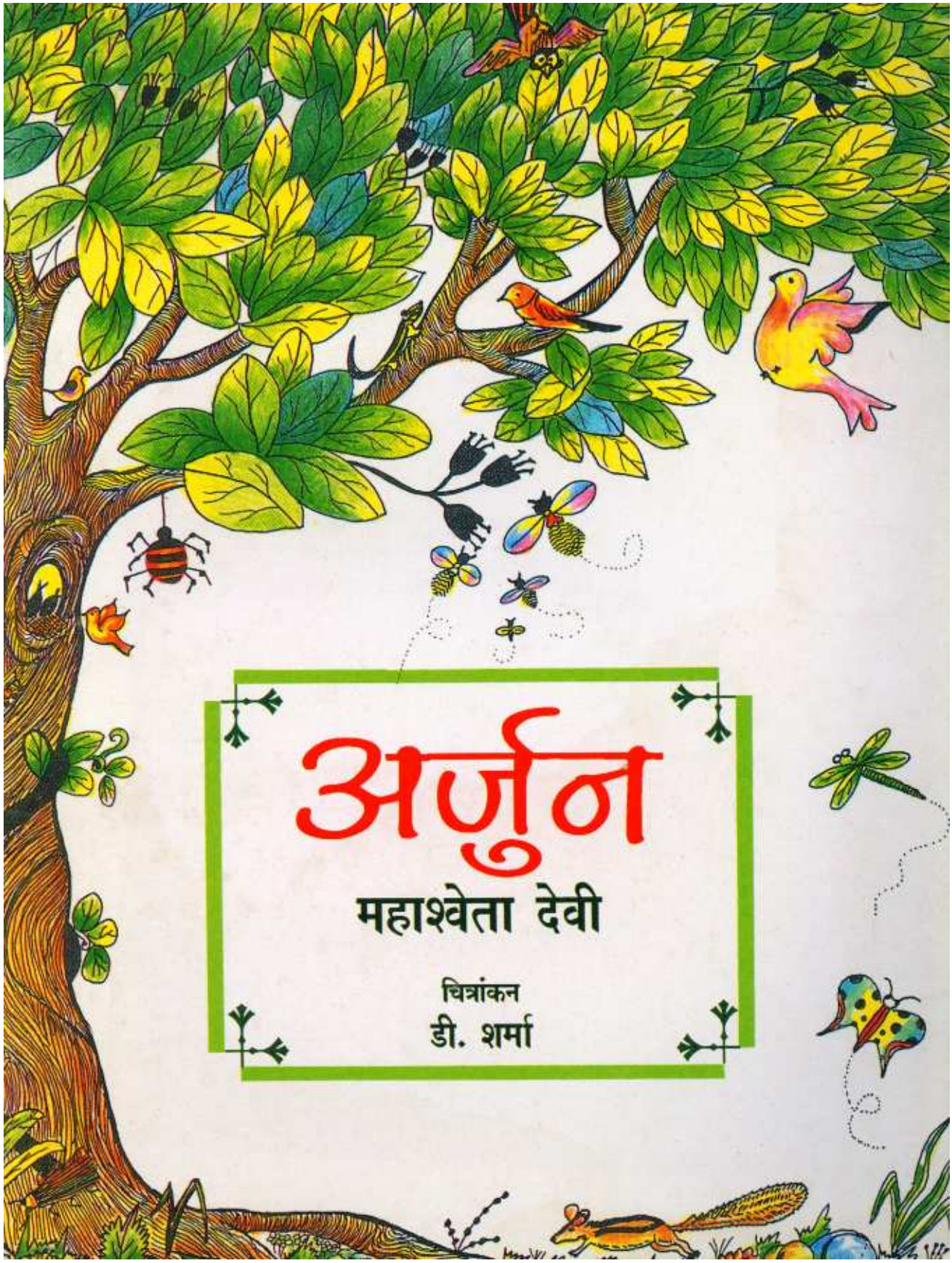
अर्जुन
महाश्वेता देवी
चित्रांकन
डी. शर्मा

अगहन बीतने वाला था, पूस अभी शुरू नहीं हुआ था। अभी न उतनी ठंड़ पड़ी थी, न धूप में नरमी ही आई थी ।

केतु शबर ने दिन भर, विशाल महतो के खेत में धान काटा था। शाम को बैठा सोच रहा था थोड़ी कच्ची कहीं से मिल जाती तो मज़ा आ जाता। वह जानता है मिलेगी नहीं, पर सोचने में क्या लगता है ?

उसकी बहू महनी घर नहीं हैं । जब पति जेल में होता है तो वो धान काटकर और जंगल में शिकार करके गुजारा करती है ।

जंगल कटवाता है राम हालदार और जेल काटते हैं केतु वगैरह । केतु क्या करे उसे शाम को चार रूपये चाहिये ही चाहिये, "कहो तो पेड़ काटे, कहो तो आदमी", वह राम हालदार से कहता है ।

सरकारी जंगल काटने के अपराध में केतु जेल जाता है । राम हालदार दूसरे केतुओं की तलाश में घूमता है ।

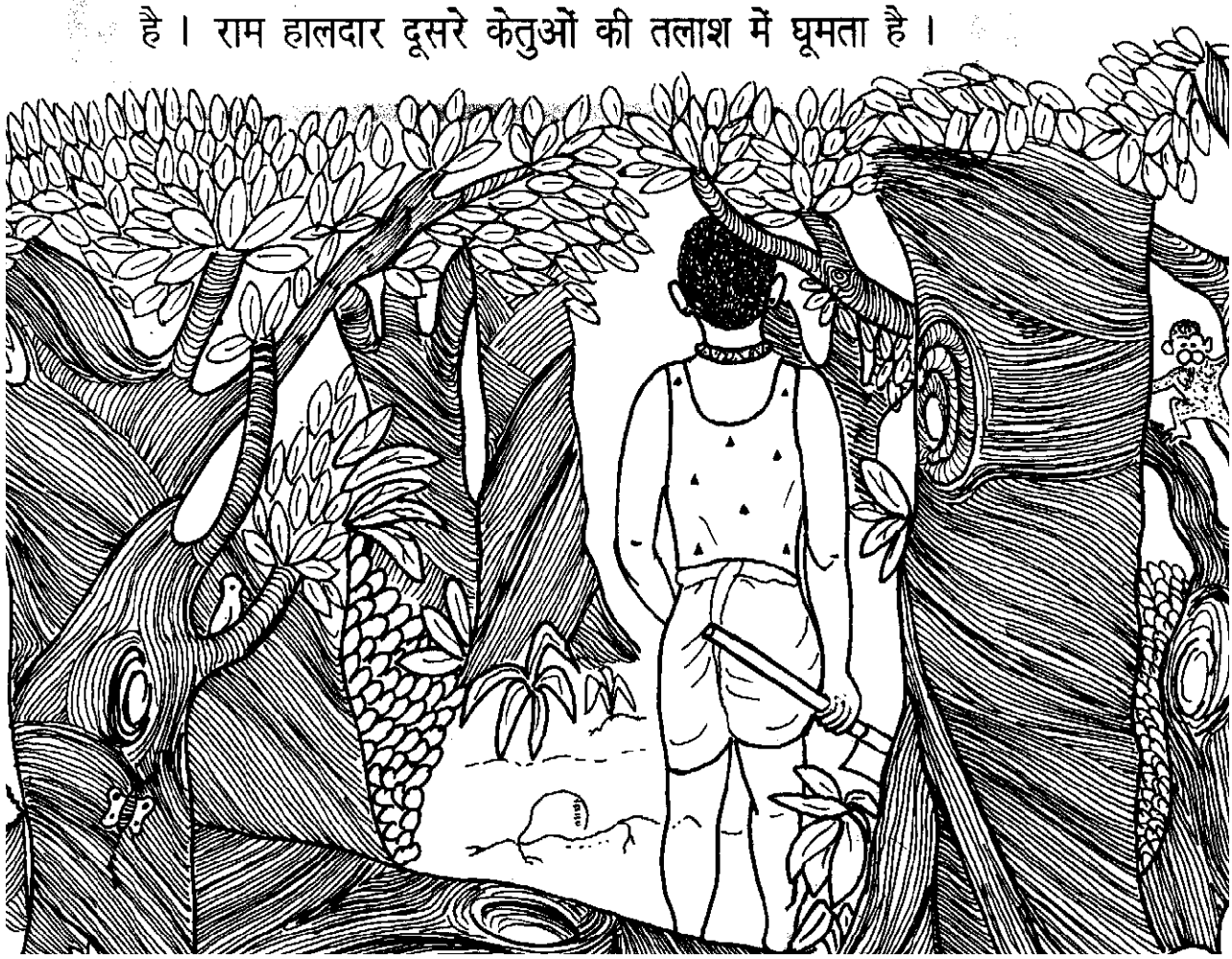

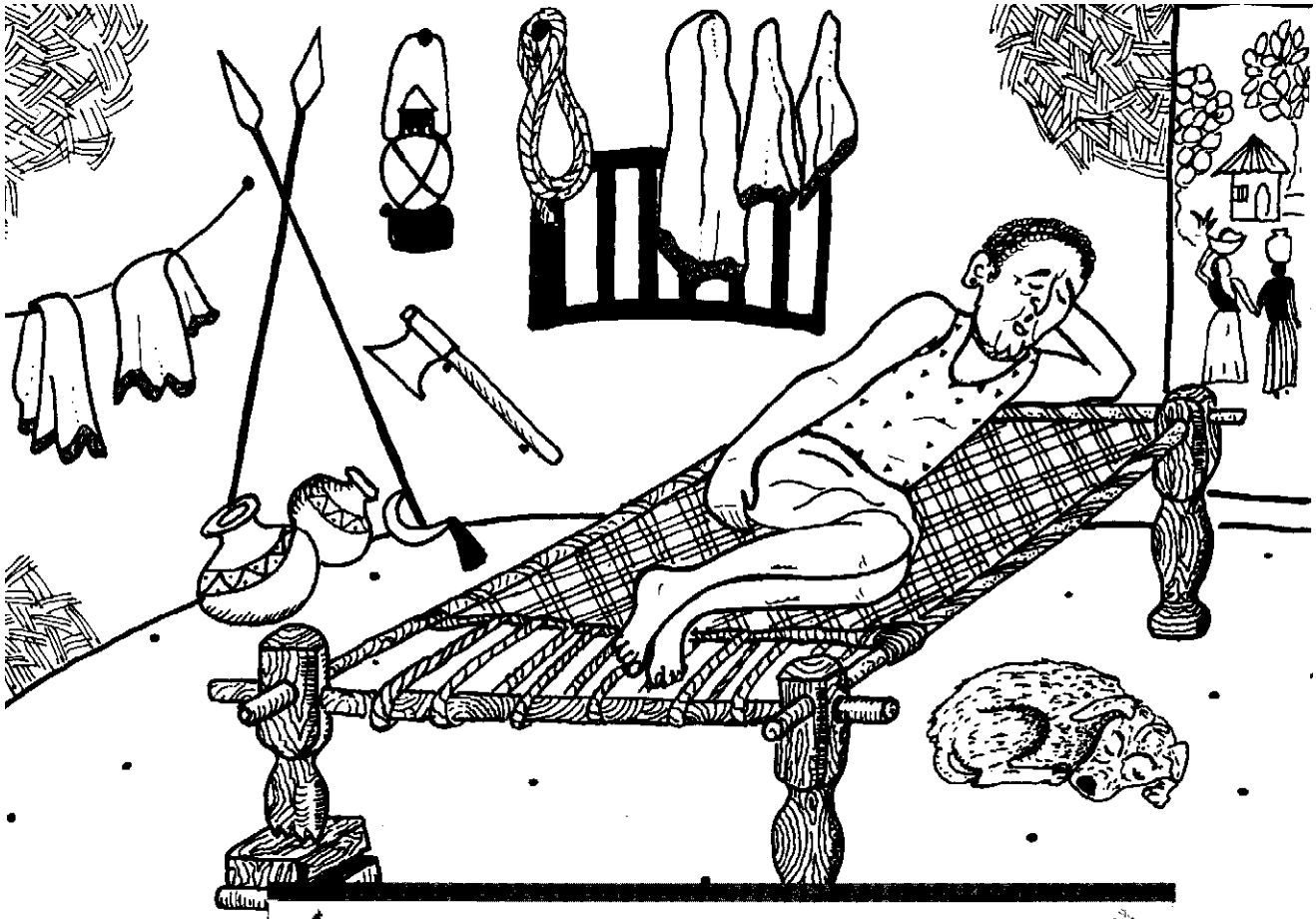

केतु ज़्यादा सोच नहीं पाता। पुरुलिया के शबर परिवार में जन्म लेने के बाद जंगल में हाथ लगाना ही होगा। जेल भी जाना होगा, यह एक नियम है।

केतु जेल जायेगा तो महनी काम ढूँढ़ने बाहर जायेगी ही – यह भी वैसा ही नियम है।

ऐसे नियमित जीवन में सूनी झोंपड़ी का धुँधलापन काटने दौड़ता है। टूटता हुआ शरीर, कच्ची की माँग करता है, थोड़ा नशा, थोड़ी यादें।

ऐसे में आ पहुँचा विशाल महतो, बोला,

"केतु रे तेरे से बात करनी है"

"भोट की बात, बाबू ?"

"अरे नहीं रे, वो तो मैं जिसे कहूँगा उसे ही देगा, है न ?"

"हाँ, बाबू ।"

"खैर, वोट की बात रहने दे । काम की बात सुन ।"

राम हालदार और विशाल महतो दो अलग-अलग गुटों के नेता हो सकते हैं, मगर केतु की नज़र में दोनों एक हैं। उनकी नज़रों में वह बुद्धू बना रहता है। इस इलाके में टिकने के लिए उसे इन दोनों देवताओं की ज़रूरत है।

वे दोनों भी जानते हैं कि काम कराने और जेल काटने के लिए शबर हैं ही। उनकी बातों को न मानने की हिम्मत कहाँ है उनमें।

केतु को जिज्ञासा होती है। वोट पड़ने वाले है। फिर भी वोट की बात नहीं हैं तो कोई बुरा काम ही होगा।

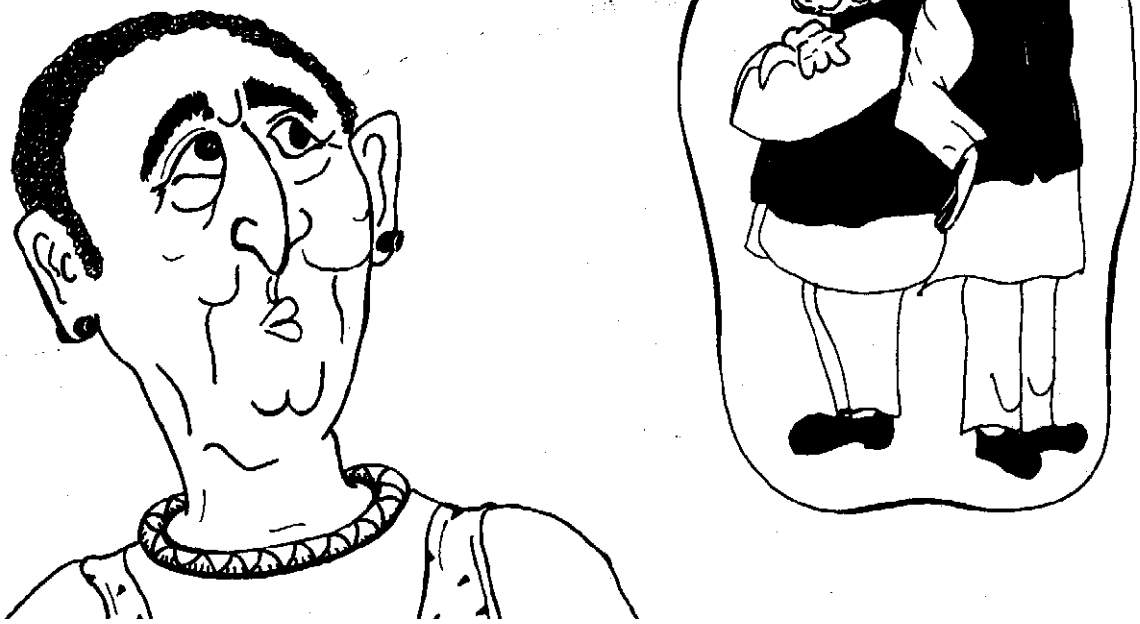

"क्या काम है, बाबू ?"

"तिराहे पर का अर्जुन का पेड़ काटना है ।"

"बाबू अभी-अभी तो जेल से आया हूँ ।"

"मैं फिर भिजवाना चाहूँ तो तू रोक लेगा ?"

"नहीं बाबू ।"

"अरे, मेरे कहने पर पेड़ काट रहा है, किसकी मजाल है तुझे जेल भेजे ?"

केतु के दिमाग़ में विचार दौड़ने लगा, सच ही तो है । राम हालदार के कहने पर जंगल काटो जो जेल जाना पड़ता है । मगर विशाल बाबू तो हाकिम हैं ।
उनके कहने पर पेड़ काटा तो जेल नहीं होगी ।

अचानक उसने एक बात कही,
"बाबू चुनाव होनेवाला है
इसलिए इस बार पक्की
सड़क होगी, क्या इसलिए
पेड़ कटवा रहे हो ?"

"सड़क के लिए नहीं रे । पेड़ मुझे चाहिऐ ?"

"उठाओगे कैसे ?"

"राम बाबू के ट्रक में ।"

उस समय शाम छिपने लगी थी । हवा में धान की गंध फैली हुई थी । विशाल का प्रस्ताव, तुरंत जेल से लौटे, केतु के सीने में पत्थर सा लगा । बात की बात में, ये लोग आदमी को मरवा डालते हैं । एक पंचायत प्रधान है तो

दूसरे का लकड़ी चीरने का कारखाना । वैसे दोनों विरोधी हैं पर विशाल अगर पेड़ कटवाये तो राम हालदार ट्रक में उठाकर जहाँ विशाल कहे पहुँचा देगा ।

राम हालदार का बड़ा कारोबार है । पहले 'वन-बचाओ का इश्तिहार लगवाता है फिर चोरी से, सरकारी जंगल के जंगल उजड़वा देता है । जो हाथ पेड़ काटते हैं उनमें कीमती उपहार और शराब थमा देता है । दोषी हो या निर्दोष, शबरों पर जंगल के अधिकारी और पुलिस, केस चलाते ही रहते हैं ।

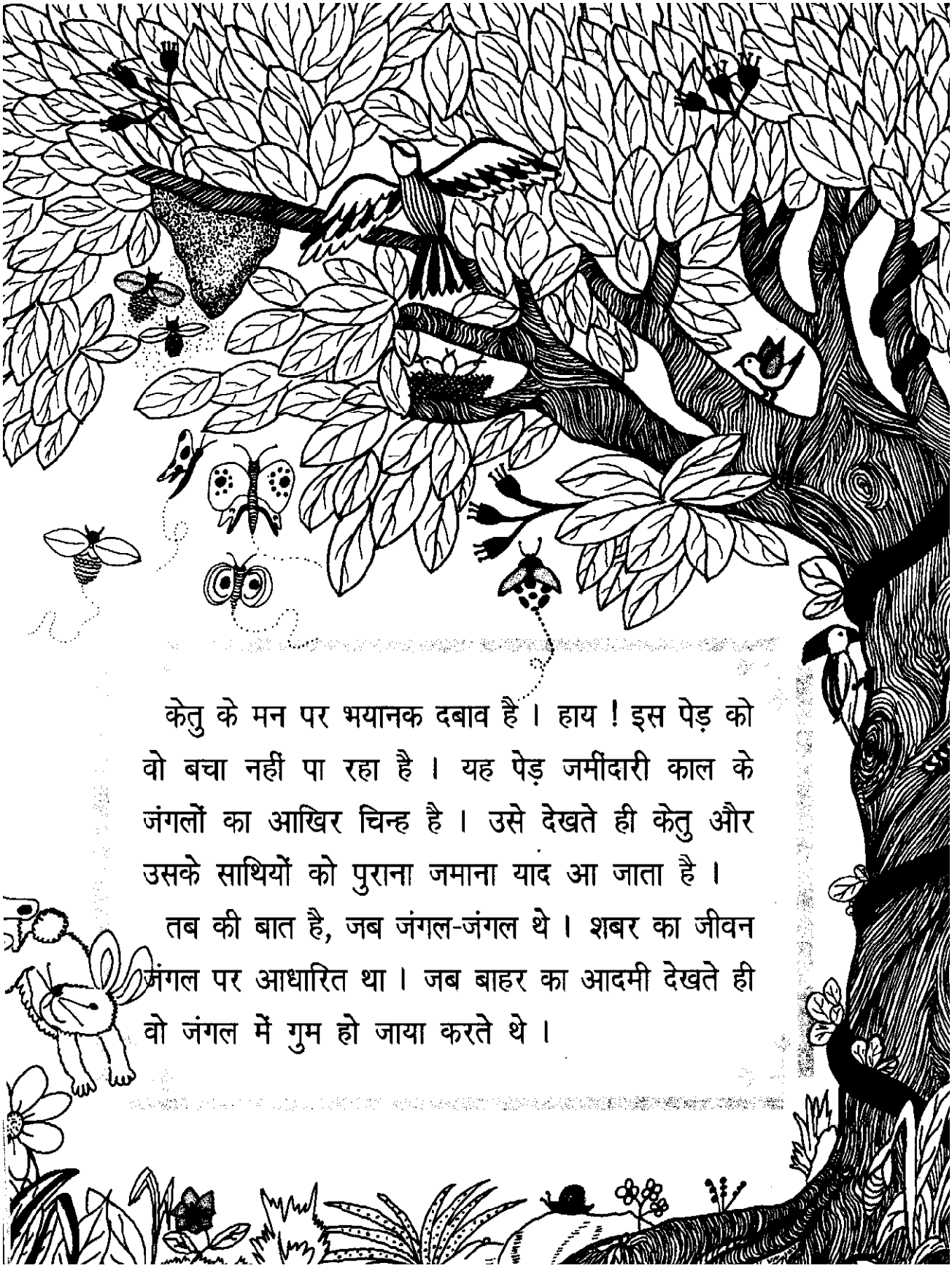

केतु के मन पर भयानक दबाव है। हाय ! इस पेड़ को वो बचा नहीं पा रहा है। यह पेड़ जमींदारी काल के जंगलों का आखिर चिन्ह है। उसे देखते ही केतु और उसके साथियों को पुराना जमाना याद आ जाता है।

तब की बात है, जब जंगल-जंगल थे। शबर का जीवन जंगल पर आधारित था। जब बाहर का आदमी देखते ही वो जंगल में गुम हो जाया करते थे।

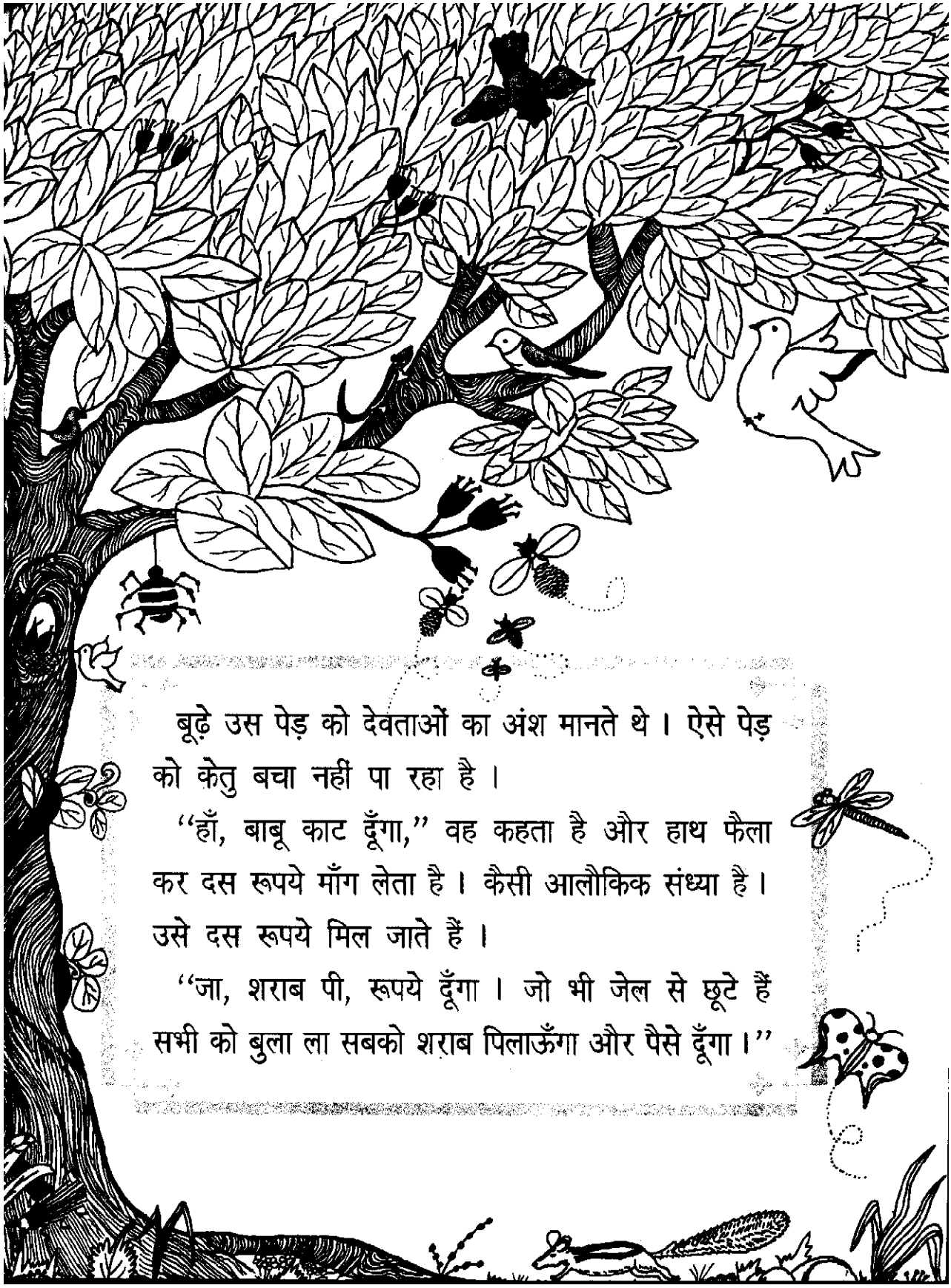

बूढ़े उस पेड़ को देवताओं का अंश मानते थे। ऐसे पेड़ को केतु बचा नहीं पा रहा है।

"हाँ, बाबू काट दूँगा," वह कहता है और हाथ फैला कर दस रूपये माँग लेता है। कैसी आलौकिक संध्या है। उसे दस रूपये मिल जाते हैं।

"जा, शराब पी, रूपये दूँगा। जो भी जेल से छूटे हैं सभी को बुला ला सबको शराब पिलाऊँगा और पैसे दूँगा।"

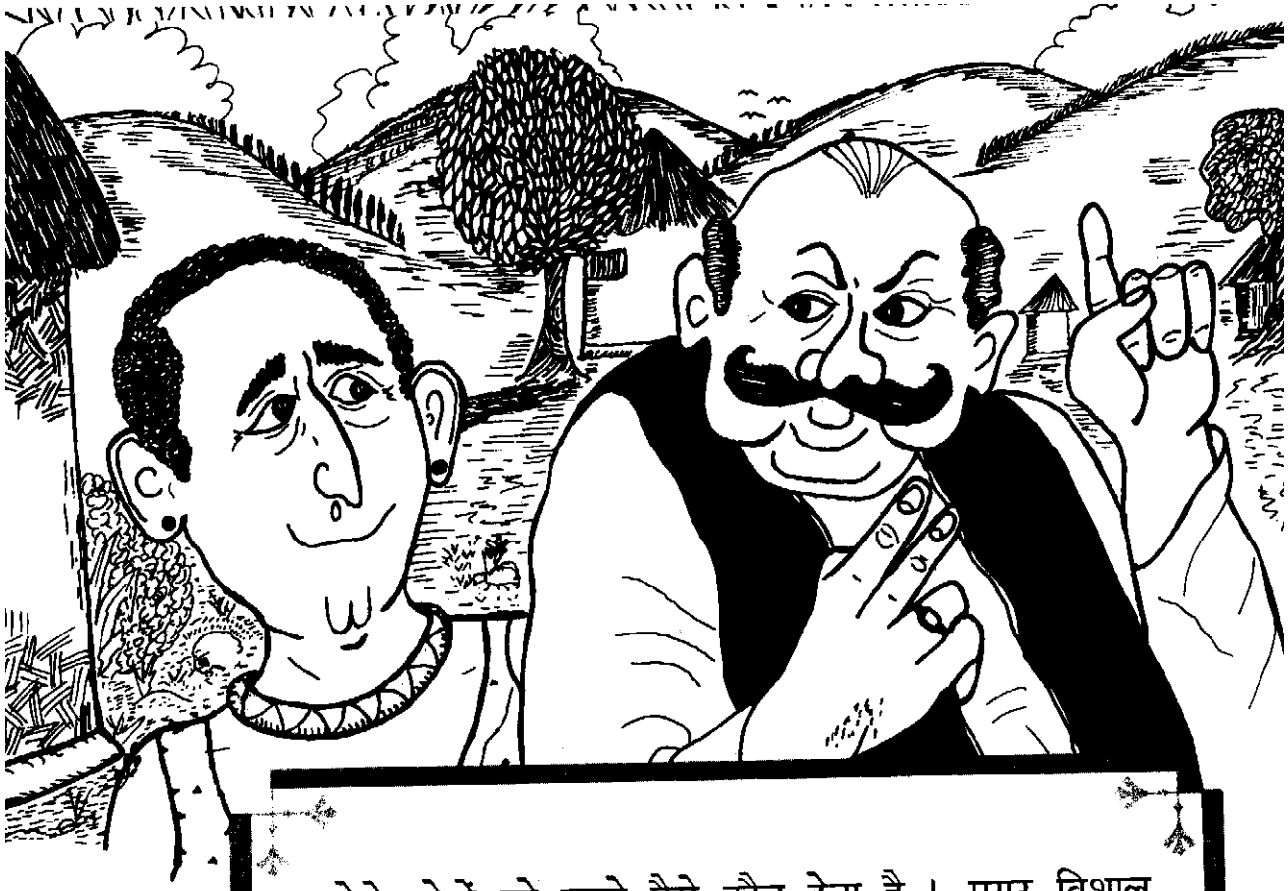

ऐसे लोगों को इतने पैसे कौन देता है। मगर विशाल बाबू दे रहा है।

"अच्छा ! मैं अब शहर जा रहा हूँ, मिटिंग करनी है। इश्तहार ले आऊँगा।"

"बाबू, थोड़े इश्तिहार मुझे देना, ज़मीन पर बिछाऊँगा। बिछाने से ठंड नहीं लगती।"

"दूँगा, दूँगा, तू दो-चार दिन के अन्दर पेड़ काट दे। मैं शहर से आकर उठवा लूँगा।"

"अर्जुन का पेड़ ?"

"हाँ, रे वही।"

विशाल चला जाता है । केतु परेशान होकर, वनमाली, दिगा और पीताम्बर के पास जाता है । वह शराब भी साथ ले गया था । इसलिए बहुत आव-भगत हुई । सभी जेल काटकर लौटे हैं । जो पेड़ काटेंगे, जेल जायेंगे और राम हालदार की कोठियाँ बनेंगी – यही नियम है ।

दिगा ही सबसे अधिक चार दर्जा पढ़ा है । सारी बात सुनकर बोला, "सोचूँगा ।"

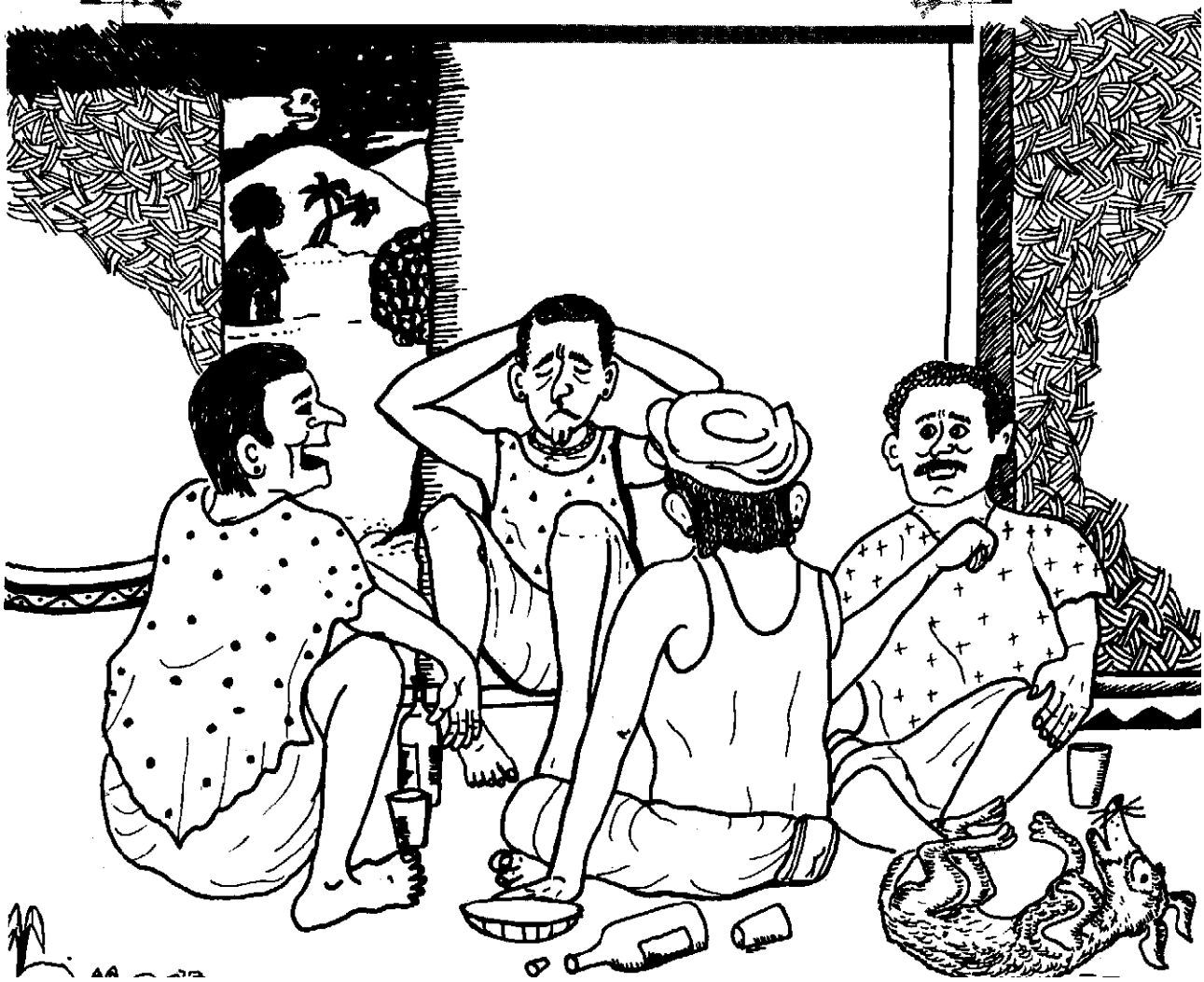

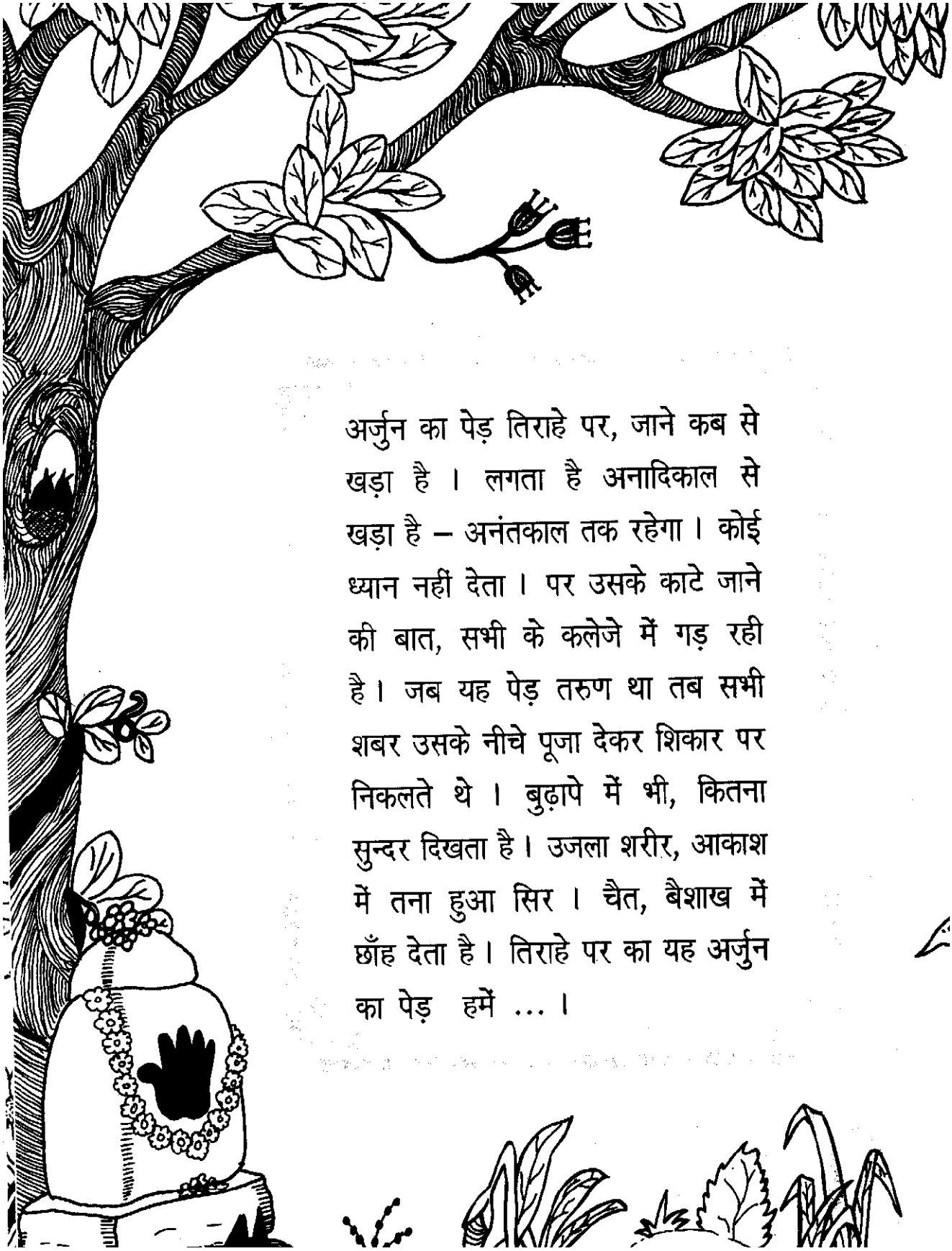

अर्जुन का पेड़ तिराहे पर, जाने कब से खड़ा है । लगता है अनादिकाल से खड़ा है – अनंतकाल तक रहेगा । कोई ध्यान नहीं देता । पर उसके काटे जाने की बात, सभी के कलेजे में गड़ रही है। जब यह पेड़ तरुण था तब सभी शबर उसके नीचे पूजा देकर शिकार पर निकलते थे । बुढ़ापे में भी, कितना सुन्दर दिखता है। उजला शरीर, आकाश में तना हुआ सिर । चैत, बैशाख में छाँह देता है। तिराहे पर का यह अर्जुन का पेड़ हमें ... ।

चारों शबर, नशे में धुत हो सोच रहे हैं । सोच रहे हैं – ब्याह या त्यौहार पर हम वहाँ ढोल ताशे बजाते हैं । बच्चे का मुंडन हो तो केश, उसी पेड़ के नीचे गाड़ते हैं ।

"यह तो दवाई का पेड़ है।" पीताम्बर फुसफुसाया, "बाँधना जागरण के दिन संथाल, उसी पेड़ के नीचे गोरू नचाने जाते हैं ।

पेड़ काटने पर जेल, न काटने पर भी जेल ।

"कितने दिनों से यहाँ, हमारा पहरा दे रहा है ?" पीताम्बर ने कहा ।

धीरे-धीरे, उस पेड़ से जुड़ी घटनायें, उन लोगों को याद आने लगी । वे मुट्ठी भर लोग, जिन्हें सरकार और समाज उजाड़ता है, उपयोग करता है, फिर जेल भिजवा देता है सहसा समझ गये कि उस पेड़ की स्थिति भी उन्हीं की तरह है ।

"विशाल बाबू तो शहर जा रहे हैं । पैसे माँग लेता हूँ ।"

"काटोगे पेड़ तुम ?"

"पाँच आदमी काफी हैं । सौ रूपये माँगे हम ।"

"जेल जाना होगा ।"

दिगा धूर्त और चालाक हँसी हँसता है । बहुत बार जेल जाकर, शबर के चेहरे पर भी, मुखौटा चढ़ गया है । असली मुख छिपा रहता है ।

चार अक्षर सीख कर पंड़ित, जगह-जगह के जेल-जीवन के अनुभवी दिगा शबर ने, विशाल बाबू को माँ की तरह विश्वास दिलाया ।

"बाबू, तू निश्चिन्त हो कर जा, भोट की मीटिंग कर । पैसा दे जा । परसों देखना पेड़ गायब मिलेगा ।

विशाल महतो सन्तुष्ट होकर चला जाता है ।

शहर पहुँचते ही हर बाजार में सभा। यहाँ भी भाग दौड़ ही रहती है। बहू के लिए न जाने कितने ही काम हैं।

बहुत निश्चिन्त होकर, विशाल वानडीही लौटता है। सड़क के न बनने से कितनी परेशानी है। एक नदी के बाद दूसरी पार करो, बस पकड़ो, उबड़-खाबड रास्ते पर चलो। चुनाव के आसार तो अच्छे ही दिख रहे हैं। गाँव के पास आते उसका सिर घूमने लगता है।

आकाश में तना, अर्जुन वृक्ष खड़ा सिर हिला रहा है। जैसे गाँव का पहरेदार हो।

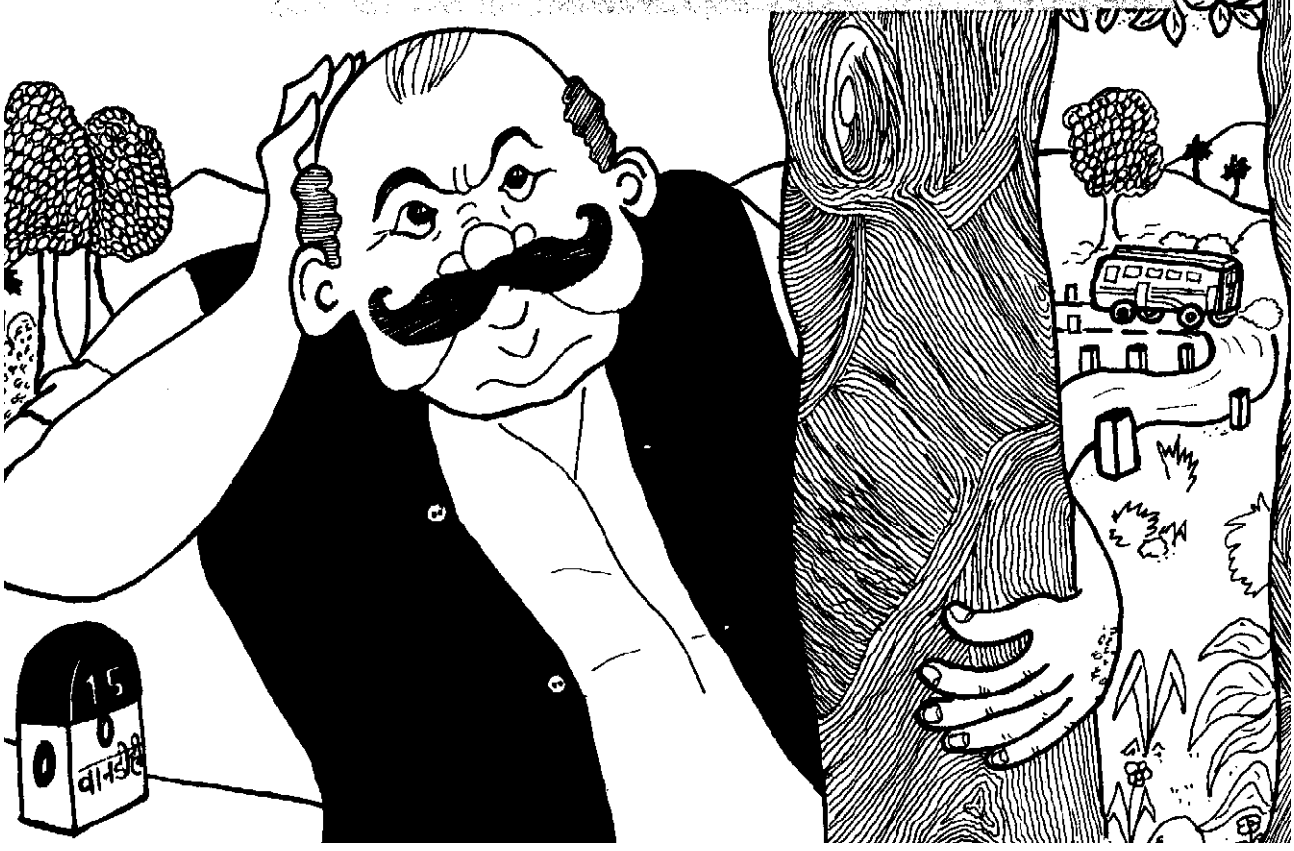

उसे सुनाई पड़ता है ढ़ोल-नगाड़े और भीड़ का शोर। विशाल गाँव में घुसता है। भीड़ उमड़ रही है पेड़ के तने पर फूलमालायें लिपटी हुई हैं। पूजा चल रही है।

राम हालदार साईकिल पकड़े खड़ा है।

"क्या बात है ?"

"ग्राम देवता बना दिया पेड़ को।"

"किसने ?"

"दिगा शबर को सपना आया था, तुमने भी रूपये दिए हैं चबूतरा बनाने के लिये।"

"हम इनको बुद्धू समझते थे। इन्होंने तो हमें उल्लू बना दिया।" विशाल हार मानकर आगे बढ़ गया।

भीड़ ! क्या भीड़ थी ! केतु घूम-घूम कर नाच रहा था।

ये पेड़, ये लोग न जाने आज उसे क्यों अजनबी लग रहे हैं। भय, भयंकर भय लग रहा है उसे।

... मैं अर्जुन का पेड़ हूँ। मैं अभारी हूँ शबरों का, जिन्होंने विशाल जैसे लालची ठेकेदार से मेरी रक्षा की। मैं जानता हूँ कि आपको घर बनाने, खाना पकाने आदि के लिये लकड़ी चाहिये। मगर हम पेड़ों की कटाई का परिणाम जानते हैं आप ?

धरती का विनाश ! जी हाँ।

हम ही आपको साफ हवा देते हैं।
फल, फूल देतें हैं।
हमारी शाखाओं पर बसे
रंग-बिरंगे पक्षी इस धरती
को जीवंत बनाते हैं।
हम ही वर्षा लाते हैं।

ज़रा सोचिये ...

हमारे बिना आपका जीवन नष्ट हो जायेगा।

इस विनाश को रोकिये ! पेड़ लगाईये !! धरती बचाईये !!!

महाश्वेता देवी

महाश्वेता देवी बंगला भाषा की प्रसिद्ध लेखिका होने के साथ-साथ एक कर्मठ समाज सेविका भी हैं। महाश्वेता जी ने विश्वभारती, शान्ति निकेतन से शिक्षा ग्रहण की। कुछ समय तक ये एक अध्यापिका भी रहीं। सन् 1956 में उनकी पहली पुस्तक "झाँसीर रानी" प्रकाशित हुई। उनके लगभग 42 उपन्यास 15 कहानी संकलन और 5 बाल-पुस्तकें प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी कुछ प्रसिद्ध कृतियां हैं हाजार चुराशिर मा, 'अग्निगर्भ' और 'अरण्येर' अधिकार' जिसे 1979 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था। वे पुरूलिया में रहकर वहाँ के आदिवासियों के उत्थान के लिये कार्य कर रही हैं। इसके लिये उन्हें 1986 में 'पदमीश्री' सम्मान प्राप्त हुआ था।

'अर्जुन' भी इन्हीं शबर आदिवासियों के जीवन से जुड़ी एक अर्थ पूर्ण कहानी है।

ISBN 81-85586-63-2